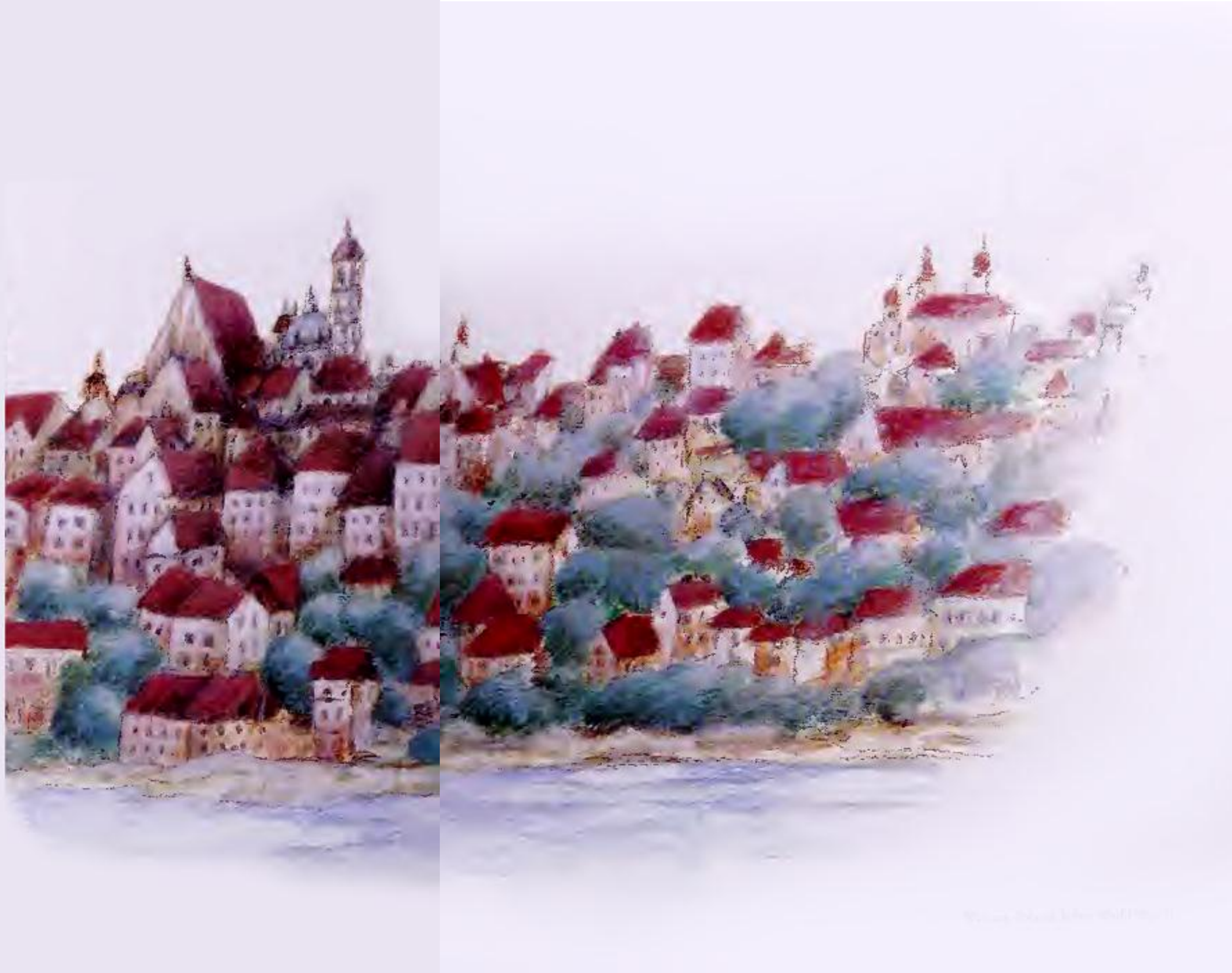
बच्चों के चैंपियन

जानुस कोरज़ाक की कहानी



जानुस कोरज़ाक का बचपन वारसॉ में बीता. उस समय पोलैंड पर रूस का वर्चस्व था. जानुस कोरज़ाक की कामना थी कि वो एक राजा बने, ताकि वो सड़क पर रहने को मज़बूर गरीब और पीड़ित बच्चों के लिए एक बेहतर दुनिया गढ़ सके. यद्यपि वो कभी भी राजा बनने में कामयाब नहीं हुआ, लेकिन कोरज़ाक एक प्रसिद्ध चिकित्सक, लेखक और बच्चों के अधिकारों का हिमायती बना. 1912 में, जब यूरोप में यहूदी लोगों के लिए जीवन कठिन होता जा रहा था, तब कोरज़ाक ने यहूदी बच्चों के लिए एक असाधारण अनाथालय डिजाइन किया. वो मानता था कि अनाथ बच्चे खुद को स्वयं-शासित कर पाएंगे. कोरज़ाक ने अनाथालय में बच्चों को खुद की संसद चुनने, अदालत चलाने और साप्ताहिक समाचार पत्र निकालने के लिए प्रोत्साहित किया. हिटलर के सत्ता में आने के बाद कोरज़क को अपने अनाथालय को वारसॉ की यहूदी बस्ती में शिफ्ट करने के लिए मजबूर किया गया और फिर कोरज़ाक के लिए बच्चों के लिए भोजन और दवा खरीदना बहुत मुश्किल हो गया. फिर भी कोरज़ाक ने कभी भी अपने आदर्शों को नहीं खोया. जब हिटलर के फौजी कोरज़ाक के बच्चों को गैस-भट्टियों में ले जा रहे थे तब भी कोरज़ाक ने अपने बच्चों का साथ नहीं छोड़ा. उस भयानक दौर में भी कोरज़ाक ने बच्चों को जितना संभव हुआ, उतना प्यार दिया.



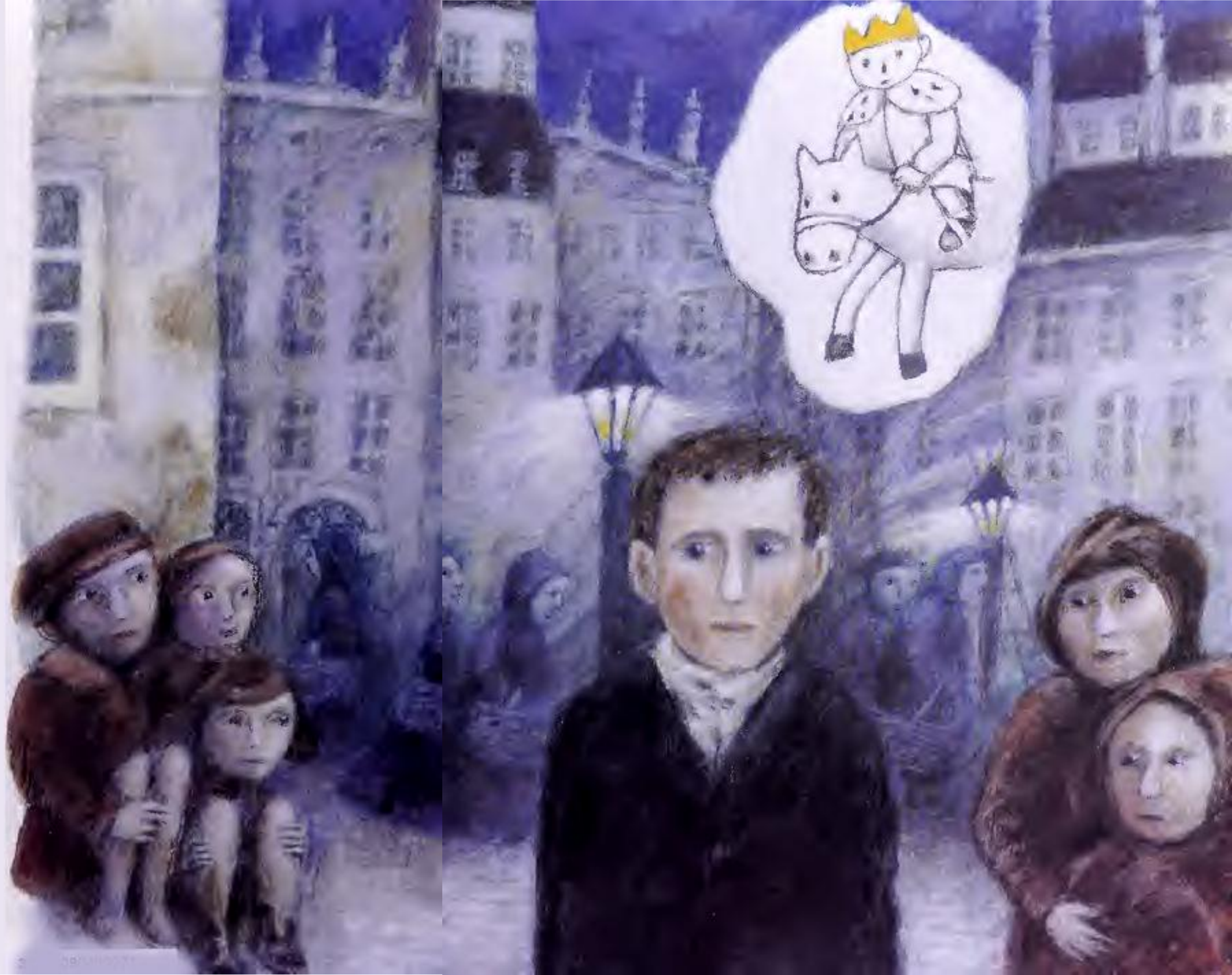
बच्चों के चैंपियन

जानुस कोरज़ाक की कहानी



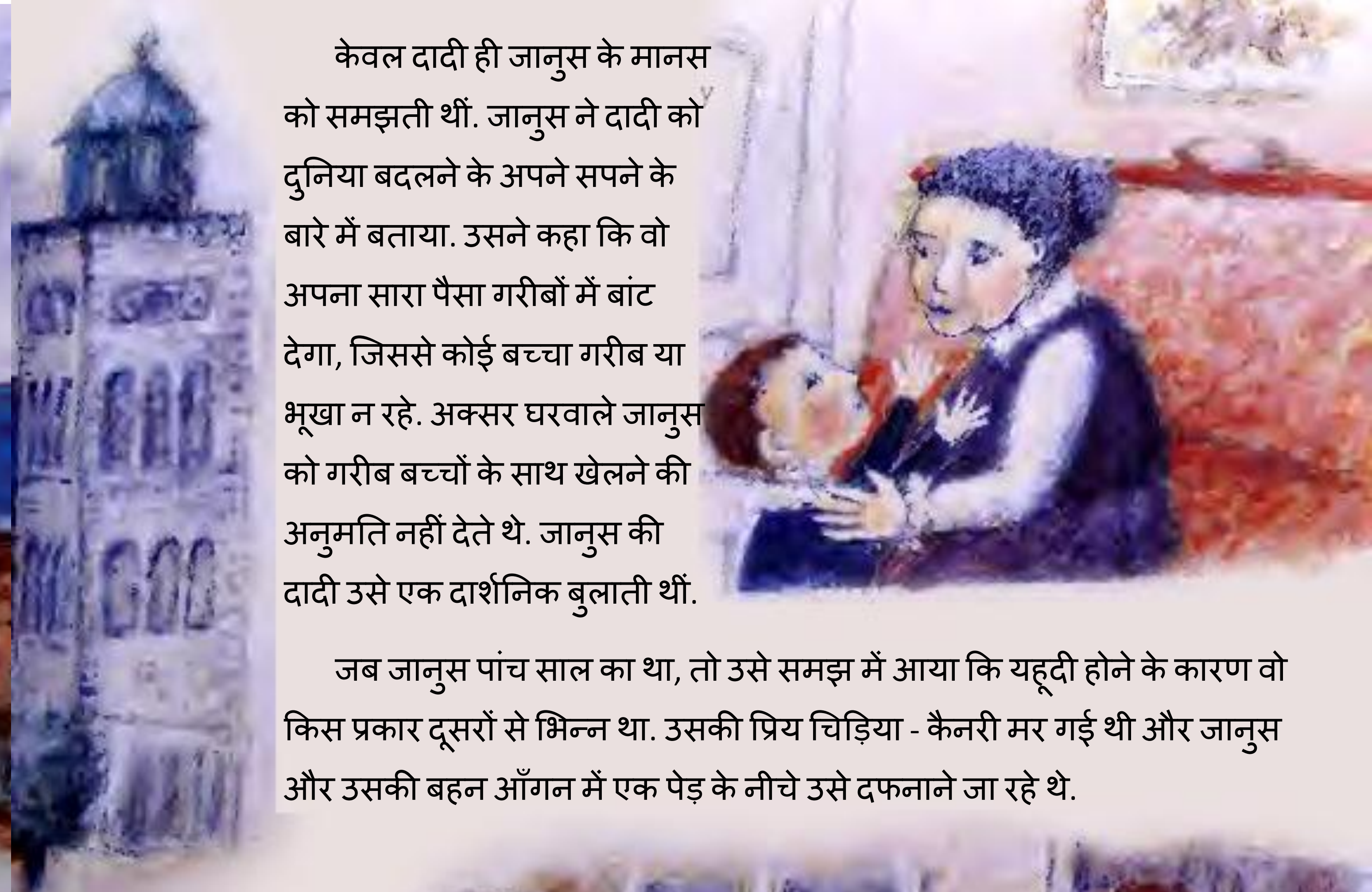
1889 में एक बरसात के दिन, एक लड़का पोलैंड के वारसॉ के पुराने शहर की सड़कों पर घूम रहा था. जिन लोगों को उसने देखा, वे बहुत गरीब थे, और वे सभी भूखे थे. उनमें से कई बच्चे बेघर थे जो फटे कपड़े पहने थे. वो लड़का उन गरीब बच्चों की मदद करना चाहता था. काश वो एक राजा होता! फिर उसने खुद को सफेद घोड़े पर सवार एक राजा होने कल्पना की. वो गरीब, असहाय बच्चों के लिए एक बेहतर दुनिया रचेगा, एक ऐसी दुनिया जहाँ कोई भी पीड़ित न हो.

यह **जानुस कोरज़ाक** की कहानी है. वो एक ऐसे नायाब इंसान थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन बच्चों की मदद के लिए समर्पित किया.





जानुस कोरज़ाक का जन्म 1878 में, वारसॉ में हेनरिक गोल्डस्मिथ के रूप में हुआ, लेकिन लेखक के रूप में वो जानुस कोरज़ाक ने नाम से प्रसिद्ध हुए. इसलिए हम उन्हें जानुस कोरज़ाक के नाम से ही बुलाएंगे. जानुस, वारसॉ में शाही महल के पास एक आरामदायक घर में पला-बढ़ा, जहां उसे भरपूर प्यार मिला और उसकी अच्छी देखभाल हुई. वो खुद अपने आप अकेले घंटों खेलता था, और लकड़ी के गुटकों से काल्पनिक शहर रचता था. वो बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध छेड़ता था. कल्पना जगत में खोए रहने के कारण उसके माता-पिता बहुत चिंतित रहते थे.



केवल दादी ही जानुस के मानस को समझती थीं. जानुस ने दादी को दुनिया बदलने के अपने सपने के बारे में बताया. उसने कहा कि वो अपना सारा पैसा गरीबों में बांट देगा, जिससे कोई बच्चा गरीब या भूखा न रहे. अक्सर घरवाले जानुस को गरीब बच्चों के साथ खेलने की अनुमति नहीं देते थे. जानुस की दादी उसे एक दार्शनिक बुलाती थीं.

जब जानुस पांच साल का था, तो उसे समझ में आया कि यहूदी होने के कारण वो किस प्रकार दूसरों से भिन्न था. उसकी प्रिय चिड़िया - कैनरी मर गई थी और जानुस और उसकी बहन आँगन में एक पेड़ के नीचे उसे दफनाने जा रहे थे.



जानूस चिड़िया की कब्र पर सलीब लगाना चाहता था, जैसा कि ईसाई कब्रिस्तानों में होता है जिससे कि उसकी कैनरी स्वर्ग जा सके. लेकिन घर की नौकरानी ने कहा कि वो पक्षी एक क्रॉस (सलीब) के लायक नहीं था और चौकीदार के बेटे ने कहा कि क्योंकि कैनरी यहूदी थी इसलिए वो कभी स्वर्ग में जा ही नहीं सकती थी. जानुस ने इस बारे में गंभीरता से सोचा.

बचपन में जानुस अपनी आया और छोटी बहन के साथ सेक्सन गार्डन घूमने जाता था. वहां वो गौरइयों को दाना खिलाता था और वहां पर आए लोगों की बातचीत को गंभीरता से सुनता था.



उसके पिता उसे नदी के किनारे लंबी सैर पर ले जाते थे, वहां वे ऐसे लोगों को देखते थे जिन्हें जीवनयापन के लिए बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी.



वे अक्सर वारसॉ के पुराने शहर में भी जाते थे जहां बहुत गरीब लोग रहते थे. वहां पर जानुस ने पहली बार बच्चों के जीवन की कठिनाइयों को करीबी से देखा.



लेकिन स्कूल में, जानुस के लिए भी जीवन कठिन था. उसे रूसी भाषा बोलनी पड़ती थी क्योंकि उस समय पोलैंड, रूस के आधीन था. स्कूल में बच्चों के कोई अधिकार नहीं थे और छोटी सी गलती के लिए भी उन्हें कड़ी सजा मिलती थी. कोई भी उस पर सवाल नहीं उठाता था. लेकिन जानुस को अपने दिल में पता था कि वो गलत था.



जब जानुस ग्यारह साल का हुआ, तो उसके जीवन में नाटकीय रूप से बदलाव आया. उसके पिता बीमारी के कारण काम करने में असमर्थ हो गए. सात साल बाद, उनकी मृत्यु हो गई. जानुस ने परिवार की आर्थिक मदद के लिए छात्रों को ट्यूशन देनी शुरू की. अपने खुद के संघर्ष के कारण जानुस ने वारसॉ के कई बच्चों की मदद करने का और भी अधिक दृढ़ संकल्प लिया. उसने पुराने शहर में बच्चों के बीच में भोजन बांटा और उन्हें आशा दिलाने की कोशिश की. गरीब बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने का उनका सपना कभी भी फीका नहीं पड़ा.





जब जानुस विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था तब उसने यह पक्की तरह तय किया कि वो बच्चों की मदद करने में अपना पूरा जीवन समर्पित करेगा. उसने डॉक्टरी की पढ़ाई की और बच्चों का विशेषज्ञ बना.

लेकिन उसकी योजना में रूसी-जापानी युद्ध ने बाधा डाली. उस युद्ध में जानुस ने एक चिकित्सा की हैसियत से काम किया. उसने न केवल घायल सैनिकों का, बल्कि उन बच्चों का भी इलाज किया जो युद्ध में हताहत हुए थे. उसने युद्ध में लोगों को ज़ख्मी होते और मरते हुए देखा. तब उसे अपने बचपन के कल्पना जगत के युद्धों और असली लड़ाई के बीच का अंतर नज़र आया.

युद्ध के बाद, जानुस ने दिन के दौरान एक यहूदी बच्चों के अस्पताल में काम किया और शाम को गरीब परिवारों के बच्चों का मुफ्त इलाज किया.



देर रात घर लौटने के बाद वो, जानुस कोरज़ाक के नाम से लिखने लगा. उसने लेखों और पुस्तकों में, शिक्षा और अनाथालयों के बारे में अपने विचार रखे. जानुस कोरज़ाक जल्द ही एक काबिल डॉक्टर, लेखक और बच्चों के अधिकारों के लिए लड़ने वाले सक्षम कार्यकर्ता के रूप में जाना जाने लगा.

जब अनाथ सहायता सोसाइटी ने उससे यहूदी बच्चों के एक नए अनाथालय का निदेशक बनने के लिए कहा, तो कोरज़ाक ने वो काम तुरंत स्वीकार किया. बच्चों का इलाज करने के अलावा वो उनके लिए और बहुत कुछ करना चाहता था - वह उनका जीवन बदलना चाहता था. इसलिए उसने अनाथालय शुरू करने के लिए अपनी डॉक्टरी प्रैक्टिस को त्याग दिया.

अनाथालयों के बारे में अधिक जानने के लिए कोरज़ाक ने पेरिस, बर्लिन और लंदन की यात्रा की. फिर उसने आर्किटेक्ट के साथ मिलकर अनाथालय का एक ऐसा डिजाइन बनाया जिसमें गरीब बच्चे पनपें और जीवन में आगे बढ़ सकें.



1912 में, 92 क्रोचमालना स्ट्रीट पर अनाथालय भवन बनकर तैयार हुआ. जानुस कोरज़ाक और स्टेफ़ानिया विल्ज़िनस्का ने साथ मिलकर अनाथालय चलाने का काम संभाला. बच्चों का स्वागत करने के लिए वहां दोनों मौजूद थे.



कोरज़ाक चाहते थे बच्चे खुद अनुशासन करना सीखें. उन्होंने अनाथालय के नियम बनाने के लिए एक संसद का चुनाव करवाया. संसद में पारित नियमों का पालन कोरज़ाक समेत सभी लोगों को करना पड़ता था.



बच्चों की अदालत भी बच्चों द्वारा ही संचालित होती थी. अगर कोई नियम तोड़ता था, तो उसमें दंड पर फैसला लिया जाता था. सबसे महत्वपूर्ण नियम माफी का था, और कोरज़ाक ने उन्हें सिखाया कि पहली बार गलती करना ठीक था, जिससे लोग उसी गलती को दुबारा फिर कभी न दोहराएं



अनाथालय एक साप्ताहिक अखबार भी निकालता था, जिसमें सभी योगदान करते थे - बच्चे, शिक्षक, अनाथालय के दोस्त और खुद कोरज़ाक भी. शनिवार को, नाश्ते के बाद, बच्चे सप्ताह की घटनाओं और समस्याओं के बारे में चर्चा करने के लिए कोरज़ाक के आसपास इकट्ठे होते थे.



जब नए बच्चे अनाथालय में आते, तो पहले तीन महीनों तक उनकी मदद का भार एक बड़े बच्चे को सौंपा जाता था. कुछ समय बाद नया बच्चा एक अन्य. नवागंतुक की मदद करने के लिए तैयार हो जाता था. कोरज़ाक ने एक बहुत बड़े परिवार के गठन के बारे में सोचा. बच्चों ने अनाथालय में एक-दूसरे से प्रेम करना, दूसरों को सम्मान देना और आत्मनिर्भर बनना सीखा

सप्ताह में एक बार, बच्चों का वज़न लिया जाता था और उनकी जांच की जाती थी फिर उन्हें नहलाया जाता था. कई बच्चों के लिए यह एक नया अनुभव था.

शुक्रवार की रातें खास होती थीं क्योंकि उस दिन सभी मिलकर यहूदी "सैबथ" का दिन अपने खूबसूरत डाइनिंग रूम में मनाते थे, जहाँ वे खेल खेलते थे, पढ़ते थे और अपना होमवर्क भी करते थे.

बाद में, डारमेट्री में, कोरज़ाक उन्हें कहानियां और परियों की कहानी सुनाते थे, जैसे "पस्स इन बूट्स" जिससे बच्चों को लगे कि जीवन आश्चर्यों से भरा हुआ था और उसमें कुछ भी संभव था.



अनाथालय चलाना एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी थी, लेकिन कोरज़ाक हमेशा बच्चों के साथ समय बिताने की कोशिश करते थे. उन्होंने बच्चों को सिलाई और बढ़ईगीरी जैसे उपयोगी कौशल भी सिखाए, लेकिन कोरज़ाक उनके साथ मजाक भी करते थे और खूब खेल भी खेलते थे.





हर गर्मियों में, अनाथालय के सभी बच्चे ग्रामीण इलाकों में ग्रीष्मकालीन शिविर में छुट्टियां बिताने जाते थे. वहां, बच्चे सब्ज़ी के खेतों में काम करते थे, तैराकी और खेल खेलते थे और जंगल की सैर करते थे. कोरज़ाक का मानना था कि बच्चों की वृद्धि और विकास के लिए के लिए शिक्षा के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी बहुत महत्वपूर्ण था.





क्रोचमालना अनाथालय की इतनी प्रशंसा हुई कि कोरज़ाक को पोलिश श्रमिकों के बच्चों के लिए एक अन्य अनाथालय बनाने में मदद करने के लिए कहा गया गया. वहां उन्होंने मैरीना फाल्स्का के साथ काम किया. वहां भी यहूदी बच्चों के अनाथालय जैसे ही स्व-शासन की व्यवस्था थी. नए अनाथालय को एक हवाई जहाज के आकार में बनाया गया था और उसे बच्चे "हमारा घर" कहते थे.

कोरज़ाक ने "द लिटिल रिव्यू" नाम का एक अखबार शुरुआत किया, जिसका प्रबंधन बच्चों के हाथों में था. पूरे पोलैंड के बच्चों को इसमें योगदान देने के लिए आमंत्रित किया गया था. उन्होंने बच्चों की रोजमर्रा की समस्याओं से निपटने में मदद करने के लिए एक रेडियो कार्यक्रम भी शुरू किया. "जब आपकी माँ या पिता आपको पीटना चाहते हों," तो उन्हें एक बार यह सुझाव दें, "उनसे आधा घंटा इंतजार करने को कहें, और तब इस बात की बहुत अधिक संभावना होगी कि उन्होंने अपना मन बदल दिया होगा."



देर रात, जब सभी बच्चे सो रहे होते थे, तब कोरज़ाक लिखने के लिए कमरे की सीढ़ियां चढ़कर अपनी अटारी में चले जाते थे. यहाँ पर उन्होंने बच्चों और वयस्कों दोनों के लिए किताबें लिखीं. यहीं पर उनकी सबसे प्रसिद्ध बच्चों की किताब "किंग मैट द फर्स्ट" लिखी गई थी.

पर अनाथालयों के बाहर की दुनिया बहुत तेज़ी से बदल रही थी. 1939 में, जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया और उससे दूसरा विश्व-युद्ध शुरू हुआ. युद्ध के पहले दिनों में कोरज़ाक ने वयस्कों और बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए रेडियो पर प्रोग्राम दिए थे.

नाजियों ने जल्द ही फैसला किया कि सभी यहूदियों को एक ऊंची दीवार से घिरे यहूदी क्वार्टर में शिफ्ट किया जाए. कोरज़ाक और बच्चों को क्रोचमालना स्ट्रीट वाला अपना आरामदायक अनाथालय छोड़ना पड़ा और उन्हें यहूदी बस्ती में जाना पड़ा.

उस बस्ती में हजारों यहूदी ठूंस-ठूंस कर भरे थे. उनका इलाका, शहर के बाकी हिस्सों से, एक ऊंची ईंट की दीवार द्वारा कटा हुआ था.

सभी यहूदियों को अपने बाज़ू पर सफ़ेद रंग की पट्टी बांधना और डेविड के एक नीले रंग का स्टार पहनना अनिवार्य था. कोरज़ाक ने वो पहनने से इंकार करके गिरफ्तारी का जोखिम उठाया.

कोरज़ाक ने घेटो के तंग घर में भी अनाथालय की ही दिनचर्या स्थापित करने की कोशिश की, लेकिन वहां स्थिति बहुत खराब थी. क्रोचमालना स्ट्रीट की तुलना में यहाँ की छोटी सी जगह में लगभग दो-गुने बच्चे थे. कमरे को खाने और सोने के लिए अलग-अलग हिस्सों में विभाजित किया गया था.

लेकिन यहाँ भी, इस कठिन दौर में भी, कोरज़ाक ने बच्चों को यथासंभव प्यार और ध्यान देने पर जोर दिया और संगीत कार्यक्रम और थिएटर कार्यक्रम आयोजित किए. वो खुद कमरे के बीच में सोते थे जिससे कि वो हर बच्चे को सोते समय देख सकें. यहीं पर कोरज़ाक ने अपनी प्रसिद्ध "घेटो-डायरी“ (यहूदी बस्ती की डायरी) लिखी.



यहाँ भी बच्चों को हर हफ्ते तौला-मापा जाता था. लेकिन भोजन की कमी के कारण यहाँ पर बच्चे हर दिन पतले और कमजोर होते जा रहे थे.



कोरज़ाक, घेटो के आसपास ही टहलने के लिए जाते थे. वो हमेशा बच्चों के लिए भोजन और दवा के लिए पैसों का इंतज़ाम करने की कोशिश करते थे. रास्ते में उसे जलाने के लिए जो कुछ भी मिलता वो उसे उठा लाते थे, जिससे जलाऊ लकड़ी के अभाव में वो घर को गर्म रख सके. और अगर उन्हें यहूदी बस्ती में कोई बेघर बच्चा मिलता तो वो आश्रय देने के लिए उसे अपने अनाथालय में ले आते थे.

कई दोस्तों ने कोरज़ाक को यहूदी बस्ती से भागने में मदद करने की पेशकश की. लेकिन कोरज़ाक ने अपने बच्चों को छोड़ने से पूरी तरह इंकार कर दिया.

दो साल बाद, नाजियों ने यहूदी बस्ती के लोगों को यातना शिविरों में भेजना शुरू किया. अगस्त 6, 1942 को कोरज़ाक के बच्चों को ट्रेन स्टेशन ले जाने का आदेश मिला. कोरज़ाक ने एक शांत जुलूस में बच्चों को यहूदी बस्ती में से बाहर निकाला.

रास्ते में खड़े लोगों ने बच्चों की गरिमा और शिष्टता की प्रशंसा की. उन्हें यह समझ में नहीं आया कि बच्चों ने इतनी शांति से इसलिए मार्च किया क्योंकि जानुस कोरज़ाक उनके साथ थे, और उनके साथ बच्चे खुद को हमेशा सुरक्षित महसूस करते थे.

बच्चों के साथ-साथ कोरज़ाक की मृत्यु ट्रेब्लिंका की गैस-भट्टियों में हुई, लेकिन उनकी आत्मा अभी भी अमर है. कोरज़ाक ने जीवन भर बच्चों की रक्षा और उनकी भलाई के लिए काम किया. हालांकि वो अनाथालय के अपने बच्चों को प्रलय के आतंक से नहीं बचा सके, लेकिन उन्होंने जीवन भर यह प्रयास किया कि दुनिया भर के बच्चों को प्यार, शिक्षा और सुरक्षा का अधिकार मिलें.

कोरज़ाक के सम्मान में, संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1979 को, "बच्चों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष" घोषित किया. बाल-अधिकारों पर यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑन द राइट्स ऑफ़ द चाइल्ड, 1989 में बनाया गया, जो कि कोरज़ाक के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित था.

अंत



